# समय प्रबन्धन

**प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,**
**पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान**

समय प्रबन्धन जीवन निर्माण का सूत्र है। जीवन की कामयाबी का सबसे बड़ा सूत्र है समय प्रबन्धन। हर कार्य को समय से करने का प्रयास करना चाहिए। जो व्यक्ति समय के मूल्य को पहचानता है और समय का नियोजन करता है वह जीवन में कभी भी असफल नहीं होता। जर्मन दार्शनिक काण्ट का समय प्रबन्धन बहुत ही अनुशासित था। लोग उन्हें देखकर अपनी घड़ी का समय सही किया करते थे। समय प्रबन्धन उनके जीवन का मूल मंत्र था। किसी भी परीक्षा में तीन घण्टे के समय में प्रश्न पत्र को हल करना होता है, उस तीन घण्टे में कोई प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण होता है, कोई द्वितीय श्रेणी, कोई तृतीय श्रेणी और कोई अनुत्तीर्ण भी हो जाता है। समय का प्रबन्धन सही ढंग से करता है वह जीवन में सफल हो जाता है। जो छात्र परीक्षा में फेल हो जाता है वह कहता है कि समय कम हो गया, पूरा प्रश्न हल नहीं कर पाया। ऐसे विद्यार्थी जीवन में सफल नहीं हो पाते। समय का प्रबन्धन एक अच्छा गुण है।

मानव जीवन में समय का बहुत महत्व है। जिसने अपने जीवन में समय का सदुपयोग किया उसकी उन्नति होती है और जिसने समय का दुरुपयोग किया या समय को नष्ट किया, उसको समय नष्ट कर देता है। समय बड़ा बलवान होता है। समय का विवेचन साहित्यिक, धार्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से किया जा सकता है। साहित्यिक दृष्टि से समय या काल का विवेचन अनेक साहित्यकारों ने किया है। कबीरदासजी ने संसार को काल का चबैना बताया है– जगत् चबैना काल का कुछ मुख में कुछ गोद। संसार काल का चबैना है, कुछ को तो काल ने चबा डाला है और कुछ उसकी गोद में बचा हुआ है। समय आने पर उसको भी काल चबाकर समाप्त कर देगा। इस प्रकार काल एक ऐसा तत्व है जो सबके साथ समान रूप से बर्ताव करता है।

काल की दृष्टि में सब बराबर है। धार्मिक दृष्टि से काल का महत्व धर्मकर्म के लिए किया जाता है। कुछ दिन या कुछ मास धार्मिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होते है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि महीनों में माघ का महीना हूं। इसी से पता चलता है कि धार्मिक दृष्टि से भी काल का महत्व है। कुछ दिनों या कुछ महीनों में दान या पुण्य का कर्म अधिक फलदायी होता है। दार्शनिक दृष्टि से भी काल का विवेचन किया गया है। दार्शनिक दृष्टि से काल अनुमेय है। परिवर्तन के द्वारा काल का ज्ञान होता है। बचपन, युवावस्था और वृद्धावस्था में परिवर्तन निरन्तर चल रहा है। इसी से अनुमान किया जाता है कि इस परिवर्तन के पीछे काल ही कारण है। अतः काल का हर दृष्टि से महत्व है। जिसने काल का सदुपयोग कर लिया वहीं श्रेष्ठ बन जाता है। समय के अनुकूल कार्य करना चाहिए। आज का किया गया कर्म ही भाग्य या पुरुषार्थ बनता है और पुरुषार्थ के परिणाम के अनुसार ही हमें इस जीवन में फल भोगना पड़ता है। जिसने पूर्वजन्म में अच्छा कर्म किया है उसको अच्छा फल मिलता है और जिसने बुरा कर्म किया है उसे बुरा फल मिलता है।

वास्तव में काल ही बलवान होता है मनुष्य नहीं। भगवान् राम को चौदह वर्ष के लिए वनवास जाना पड़ा और वहां पर उन्होंने मर्यादा की रक्षा के लिए पूरे तन–मन से प्रयास किया। कोई भी कार्य कल पर नहीं छोड़ना चाहिए। यदि काम को करना है तो उसे तत्काल को कर डालना चाहिए। क्योंकि आने वाले क्षण में क्या स्थिति रहेगी इसे कोई नहीं जानता। समय से पहले और भाग्य से अधिक किसी को कुछ भी प्राप्त नहीं होता। वृक्ष को यदि आज रोपण किया गया है तो समय पर ही वह फल देगा। कितना भी प्रयास किया जाये वह समय से पहले फल नहीं दे सकता। कार्य को करने के लिए योजनाबद्ध होना जरूरी है। जिसने अच्छे ढ़ंग से शिक्षा प्राप्त करके जीवन को सफल बना लिया है वह पूरी जिन्दगी आराम से जीता है और उसकी जवानी और बुढ़ापा आराम से बीतता है। जिसने अनावश्यक कर्म में अपने जीवन को बीताया है वह जीवन भर दुःख उठाता है। उसकी सोच नकारात्मक हो जाती है।

समय एक प्रकार का धन है जिसे या तो खर्च किया जा सकता है या उसका निवेश किया जा सकता है। यदि समय का ईमानदारी से निवेश किया गया है तो सफलता मिलती है। संसार

में अच्छी आदतों को ही अपनाना चाहिए। समय का पालन, यथार्थ दृष्टि कर्त्तव्यपरायणता और कार्यकुशलता इन्हीं आदतों के बल पर मनुष्य सफलता प्राप्त करता है। समय बहुमूल्य है इसलिए हमें समय को कभी बर्बाद नहीं करना चाहिए। बच्चों को बचपन से ही समय के मूल्य या महत्व के बारे में बताना चाहिए। समय धन से भी अधिक मूल्यवान है। धन को खर्च कर देने पर उसे पुनः प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु यदि समय को नष्ट कर दिया तो उसको प्राप्त नहीं किया जा सकता। समय और ज्वार भाटा कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करते यह बिल्कुल पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व की तरह ही सत्य है। समय निर्वाद रूप से चलता रहता है। यह कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। इसलिए हमें जीवन में कभी भी बहुमूल्य समय को व्यर्थ में गवांना नहीं चाहिए।